1934 How I got into the rut

(Note: By this time he had 3 children from his first marriage. Published in Digambar Jain)

(मैं कोल्हू का बैल कैसे बना)

उपेन्द्र भवन बिनोद मिल्स उज्जैन
१२।१२।३४
समय [illegible] २ बजे से (१)

"हाले फूले हम फिरें, होत हमारे व्याह।
तुलसी गाय बजाय के, देत काठ में पांव॥"

प्रिय बच्चो, तुम लोग व्याह को जितना सरल सीधा और आनन्द की वस्तु समझते हो, या समझ रहे हो, दर असल वह ठीक इसके विपरीत है। तुलसीदास जी का यह कहना कि 'गाय बजायके देत काठ में पांव' बिलकुल यहां तक कि अक्षरश: यथार्थ है। बल्कि मैं तो अपने अनुभवों के आधार पर यहां तक कहने को तैयार हूं, कि विवाह केवली काठ में पांव देना ही नहीं है, किन्तु सारे शरीर के एक-एक अंग का काठ (खोड़े) में बन्द होना है। जिससे सुलझना तुम्हारे इस जीवन में तो कम से कम असंभव है। अभी तक तुमने विवाहों के बाहरी हंगामों को देखा, सुना या पढ़ा है, पर जब तुम इनके भीतरी विज्ञान शास्त्र का अध्ययन करोगे, जब तुम्हारे सिर पर भी यह भार बहुत बुरा हो जायगा, तब तुम्हें पता चलेगा कि विवाह-स्त्री के बन्धन में पड़ना क्या चीज होता है। किसी अनुभवी ने सच ही कहा है—

तिरिया तुझ में तीन गुन, औगुन हैं लख चार।
मंगल गावे, सत रचे, अरु कोख न उपजे बाल॥

पर बच्चो, मैं सच कहता हूं, कि यह दोहा उन का लिखा होगा, जिसे पत्नी उनके दम से सुहागिनी-पतिव्रता स्त्री मिल गई होगी, पर मैं तो वर्तमान के सैकड़ों देखे-सुने और अनुभूत दृष्टान्तों के आधार पर उनमें केवल दो ही गुण मानने के पक्ष में हो गया हूं। मैं इसका निषेध नहीं करता कि संसार में सुहागिनी स्त्रियें हुआ ही नहीं करती हैं, या होती नहीं। होंगी, अवश्य होंगी, पर इनी-गिनी। वे भी किन्हीं महाभाग्यशालियों को ही नसीब हुई होंगी, सो जहां तक मेरा अनुभव है, शेष दो गुणों में से भी किसी न किसी गुण की कमी उनमें अवश्य ही होगी। पर तीनों गुणों वाली स्त्री तो कम से कम मुझे तो असंभव ही दिखती है।

प्रिय बच्चो तुम कह सकते हो, कि "एको गुण: खलु निहन्ति — समस्त दोषान्" अर्थात् एक ही गुण उनके समस्त दोषों को दूर कर सकता है। यदि मान लो, स्त्री मंगल मूर्ति भी नहीं हो और बाल बच्चे पैदा करने की मशीन हो तो क्या काम है, स्त्रियें कीड़े मकोड़े हों तो होंगी [illegible]

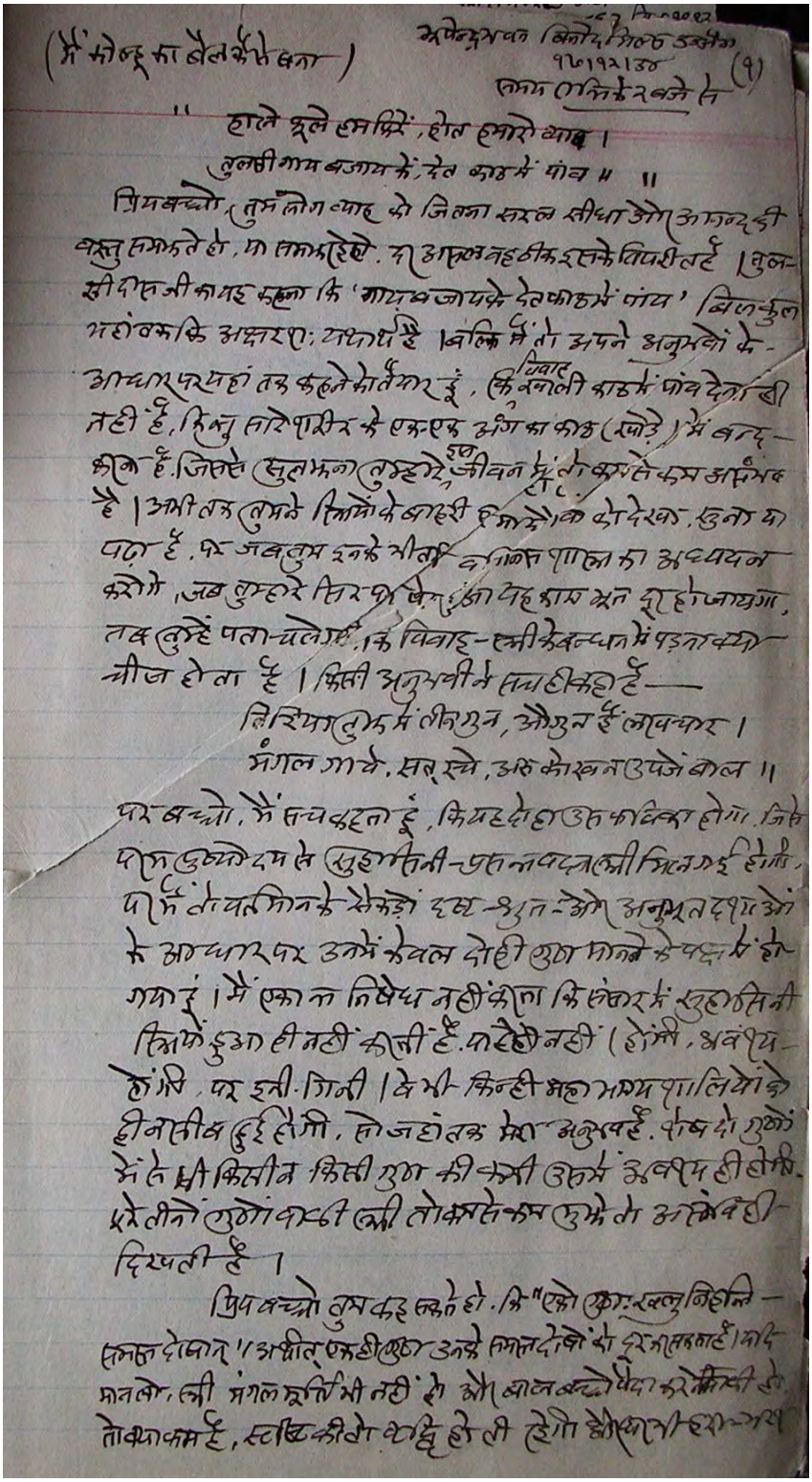

तो देखने को मिलेगा, तो भी कहना ठीक नहीं। क्योंकि 'जैसे जिसके बाप महतारी तैसे तिसके लड़का'। इस नीति में तो 'बाप' भी सम्मिलित है, पर अनुभव बताता है, कि बाप का असर तो बहुत पीछे दिखेगा, तो भी नहीं बनेगा। पर सबसे अधिक प्रभाव तो माँ का ही हुआ करता है, क्योंकि एक तो नव मास तक उसके गर्भ में रहना, फिर कम से कम ५ वर्ष तक चौबीसों घंटे उसके सहवास में रहना, और दस वर्ष तक ? रक्षण में रहना। इससे माँ के अनुरूप ही संतान पैदा होगी।

प्रिय बच्चो निश्चय समझो, मूर्ख संतान से उत्पन्न नहीं होना ही लाख दर्जे अच्छा है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि

अजात मृत मूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः।
सकृद्दुःखकरावाद्या वन्तिमस्तु पदे पदे ॥

अर्थात् पुत्र का पैदा ही न होना, या पैदा होकर मर जाना ठीक है, पर मूर्ख पुत्र का - संतान का पैदा होना ठीक नहीं। क्योंकि ~~पैदा होकर~~ पैदा न होना, या पैदा होकर मर जाने वाली संतान तो जीवन में एक बार ही दुःख देती है, पर मूर्ख संतान तो जीवन भर कदम-कदम पर दुःख दिया करती है। इसी बात को ध्यान में रख कर किसी अन्य कवि ने भी कहा है कि -

"वरं शून्या शाला, न च खलु वरो दुष्ट वृषभः"

अर्थात् शाला का सूना रहना उत्तम है, पर दुष्ट बैल का रहना उत्तम नहीं।

हां, तो मैं यह कह रहा था: जब तुम्हें कलह कारिणी मूर्ख मिलेगी ~~तो संतान भी~~ जैसा कि हजारों में निन्यानबे मिला करती हैं; तो संतान भी वैसी ही पैदा होगी। यदि किसी महापुण्य के उदय से तुम्हारी संतान आज्ञाकारिणी, तुम्हारे कहे अनुसार चलने वाली भी पैदा हो गई, तो उसकी परवरिश करना, पालन-पोषण करना हंसी-खेल नहीं है।

प्रिय युवको! तुम लोगों को कभी बात पर हंसी आ रही होगी कि यह क्या कह रहा है। बच्चों को भर पेट खाना मिलना चाहिए और क्या चाहिए नहीं, खाने और कपड़ों के सिवाय जो सबसे बड़ी और जिम्मेवारी की चीज़ है, वह है, उनकी संभाल। कल्पना करो, कड़ाके की सर्दी पड़ रही है, और सोते सोते बच्चे ने बिस्तरे में पेशाब कर दी, वह गीले कपड़ों की वजह से तिलमिला उठा, और चिल्लाता है, पर महारानी जी देवी जी खर्राटे की नींद ले रही हैं; ~~यदि~~ यदि दैववशात् उनकी नींद खुल गई, तो पहले तो उनकी दिव्य ध्वनि निकलेगी, इस हत्यारे के मारे सोने तक नहीं पाती, न दिन को चैन लेने दे और न रात को। कुलटा मर मर के जा

अपनी ओर खींच लिया. या पेशाब की हुई, तो कपड़े बदल दिए. फिर इतने में ही बच्चे
ने दूध पीकर पड़ी लादी और फिर वह चिल्लाया और इधर आवाज सुनते
ही श्रीमतीजी ने उसकी पीठ पर एक चपत लगाते हुए कहा, "[illegible] को किसे
खोंप तो लेते हैं, रात भर जरा नहीं लेने देते"। यदि वह इतने पर भी चुप नहीं हुआ
और चपत से वह और भी चिल्ला उठा, तो बस श्रीमतीजी का पारा एकदम गर्म
हो जायगा और आप नीचे सीधे ही लेक्चर शुरू हो जायगा. ऐसे सपूत से
तो बांझ ही अच्छे थे. रातभर आराम से भी सोने न दें, और इतना कहकर इधर
से उठाकर उधर (दूसरी ओर) पटक दिया, आप जरा पीछे खिसक गईं।
यहां कहनों की स्थापना है, कि बच्चे के एक ओर पड़ी जाने से पहले [illegible]
पड़ा ही पड़ी [illegible] हुआ था, अब तो वे बच्चे को इधर सुलाया, तो
इधर से ही कपड़े तर हो गए. और श्रीमतीजी के पहनने की धोती तक भी
पड़ी से तर-बतर हो गई। ~~यदि इसमें~~ पर अभी भी इतने पर ही होता तो भी उन्हें
इसकी कुछ भी फिक्र नहीं या पता तक भी नहीं। मगर हां, अभी तक इतना
सब कुछ हो जाने पर भी बच्चा चुप नहीं हुआ. और फिर और भी ~~[illegible]~~
और जोर-जोर से चिल्लाने लगा तो ~~[illegible]~~
बेचारे पर और मार पड़ने लगी. यदि इतने में ही [illegible] चिल्लाने से
नींद खुल गई, और सारी बात समझ की कहा. कि सरकार जरा देखो —

यहां यह ध्यान रखने की बात है, कि बच्चे स्वभावतः बहुत (शुद्ध हृदय वाले) हुआ करते हैं;
यद्यपि संसार की दृष्टि में वे अजान हैं, पर यदि सच [illegible] देखा जाय
तो शुद्ध आत्मा की पुकार को सर्वोपरि समझने वाले वे ही हुआ करते हैं।
उनमें इतना [illegible] विकास होता है, कि मेरे ध्यान से या अनुमान
संसार के महा पुरुषों में भी वह विकास सर्वांश रूप से नहीं हो पाता.
(शायद यह सबकी बात कुछ भी है) पर फर्क इतना ही होता है, कि वे बेचारे
मुंह से बोलने में असमर्थ होते हैं और अपने हृदय की या आवश्यकता की बात
बाहर स्पष्ट नहीं कह सकते। हालांकि वे अपनी बहुत सी चेष्टाओं
से हृदयगत सम्पूर्ण भावों को बड़े सुन्दर रूप से अपनी प्रत्येक क्रिया से
बहुत ही स्पष्ट रूप से कहा करते हैं. पर कोई उनको समझने वाला भी तो हो.
किसी ने शादी होने के पहिले या पीछे भी इस [illegible] का अभ्यास
किया होवे तो (अस्तु, प्रकृत में यह कहना था, बच्चे स्वभावतः बहुत
शुद्ध और पवित्र इच्छा करते हैं इसका एक मान [illegible] यह है, कि-

तो, वह (बच्चा) कहीं अफ़ीम के प्रभाव में तो नहीं आ गया है। यदि श्रीमती जी ~~[illegible]~~
नींद पूरी नहीं हुई होगी, तो पहिले से चुपचाप आँख बन्द किए, बिना हाथ पैर
हिलाए ही कह देंगी, "कि नहीं जगा है", यों ही रो रहा है, इसको तो रात को रोने की
आदत ही पड़ गई है। दिन को सो लेता है और को दूसरों को नहीं सोने देता
है। भाग्य से तो जी रहा है, आदि आदि। पर जब बच्चा इतने पर भी चुप नहीं
हुआ, और पतिदेव की ओर से कहा गया कि नहीं - देखो तो ज़रा, अफ़ीम-
~~[illegible]~~ भी ही ज़्यादा खा गया होगा, नहीं तो इतना नहीं रोता। यह सुनकर यदि
श्रीमती जी को नींद की अंगड़ाई ने तंग नहीं किया, तो [illegible] जाकर बोलीं... फिर
"खोज को फिरो, जो तो रखी है लेते हैं, और इनके मारे और हम नहीं ले पाए"
रात भर [illegible] चलते हुए, पड़े पड़े मैं चलाने में लगा रहे, तनक अपने —

यथार्थ में आला नामक पदार्थ बहुत ही शुद्ध, जिसकी हम और आप कल्पना
तक भी नहीं कर सकते — हवं परिचित है। उसका स्पष्ट आभास पा लाने का सरकार
बच्चों को हुआ करता है। इसलिए स्वभावतः कोई भी बच्चा मल-मूत्र में
पड़ा रहना पसन्द नहीं करता। और उससे घबरा कर रोने चिल्लाने लगता है —
किन्तु सुधमाता के अपनी ऐसी दशा में जब निकल उन्हें ~~[illegible]~~ पीटती रहती हैं, तो
उनको हमेशा पिटने का अवसर रहता है। इससे धीरे धीरे आत्मबल
[illegible] पर चुपचाप रहने लग जाते हैं और हमेशा के लिए प्रकृति के
अपकार बन जाते हैं। आगे चलकर उन्हें ~~[illegible]~~ धीरे धीरे इतनी बेपरवाही हो जाती
है, कि सोते २ ही टट्टी पेशाब कर लेने पर भी घंटों तक उसी में लथ-पथ
पड़े रह जाते हैं, क्योंकि इधर से तो जाना मल मूत्र में पड़े रहने का
अभ्यास और उधर श्रीमती जी की थपकी पर [illegible]।
ऐसा करने से सबसे बड़ी दो हानियां होती हैं, एक तो यह, कि बच्चे की
स्वाभाविक विकास शक्ति का अंकुर मांओं के पहिचान के बीच ही [illegible]
मारी जाती है और दूसरे मार खाने के डर से या तो मुँह ढक [illegible] कर लिए जाते
हैं, या ज़िद्दी और हठी और उग्र ही बन जाते हैं। मगर उन्हें [illegible]
[illegible] इतनी बड़ी बड़ी जिम्मेवारियों का एहसास तो
न बच्चे को ही होता है, और न तब दुकानियों [illegible] को विवाह को
एक आनन्द का, मौज उड़ाने का साधन समझती है। [illegible] है
पति क्या मिले, कल्प वृक्ष मिल गए। जिनकी सहूलत [illegible]
और पति क्या समझते हैं, कि [illegible] मिली, [illegible] ही खुल गया है [illegible]
आके उन्हें तंग [illegible] न दिखेगा [illegible]

[illegible]

लिया करलो, एकाद बार पांव के तो देखो होवे, आदि आदि [*] (यदि इस उपाय से पतिदेवता प्रसन्न होकर चुप हो गए, तब तो गनीमत समझिए, और यदि कहीं बीच में खुजली चल ही पड़ी, या बच्चे का चिल्लाना सुना गया और फिर भी मुँह से कह दिया, कि नहीं "जरा हाथ से या आँख से देखो तो सही, बेचारी का आँखें मूंदे २ कहता है, तो बस गज़ब ही समझिए. पहले तो २-१ बार इधर से उधर पटकेंगी, फिर अपने लल्ले को उसके ऊँचे जबड़ों से दूर कर छाती से चिपका लेने का उपक्रम करेंगी. यदि इतने पर भी वह बच्चा चुप नहीं हुआ, तो उठकर खिसिया कर बच्चे को पतिदेवता के ऊपर लो पटकेंगी और कहेंगी 'एकाध दिन तुम्हीं उठाओ समझो. हम तो कितर रहे जाते हैं आदि" पाठकों को स्मरण हो कि एक तो इधर-उधर करने से उनके (श्रीमतीजी के) सारे बिस्तर और कपड़े रही सही लथ-पथ हो ही गये थे, और अब जाकर पतिदेवता के भी कपड़े खराब कर दिए।
पतिदेवता ने बच्चे को पुचकारते हुए ज्यों ही उठाने को हाथ लगाया कि हाथ रही ले भागा — फिर पतिदेवता की कहां तक की अब वे ही चुपचाप जाकर बच्चे को ले जाकर साफ कर दें - क्योंकि वे तो स्व-के हुए थे, कि होंगी श्रीमतीजी, क्योंकि ही निकली हैं कि बच्चे के बाद हाथ लगी रही, भला. पाठक जी महाराज आप ही बतलाइए, वे कैसे तबक कह सकते हैं. मैं तो ऐलान देकर कहता हूं, कि कभी न ही करना चाहिए क्योंकि स्त्री के खुद को और रही हाथ लगाने— राम राम! छिः - छिः!! इतना धोखा!!! मेरा बस चले तो आप सब लोगों को 'धोखा देही' में दफा नं० ..... में मुकद्दमा चलाकर हाई कोर्ट से निर्णय करा कर पकड़वा दूं, और यदि बस चले, तो सूली फांसी के तख्ते पर लटका दूं. अन्यथा आजन्म कैद या कोई पानी

---

[*] पाठकगण, मैं और मेरी स्त्री, दोनों ही बुन्देलखण्डी हैं, तो रात-दिन इस प्रकार के शब्दों का व्यवहार हमारे घरों में होता है. और जिन शब्दों को हम जैसा ~~[illegible]~~ रात-दिन अपने घरों में सुना करते हैं: वैसा ही लिखा है. आप लोगों के काम की किताबों अथवा बोली में इसी प्रकार की कहावतें कहीं कहीं हैं जिसका कि कुछ काफी अनुभव है. जो इस भाषा को अपने देश की ~~[illegible]~~ लिपी को. ~~[illegible]~~ यदि सुनते २ कष्ट होता है, तो आप ही - अपनी श्रीमतीजी से पूछ कर लिख लें, और फिर पीछे पढ़ें।

—०—

की सजा तो अवश्य दिलाऊं, जिन्होंने स्त्रियों की - विवाह की [illegible]
को कह डाला कि " स्त्री संसार की शोभा है, इसको बिना [illegible] से-
कम नहीं, स्त्री पत्नीत्व का वह जीव है, जिसकी सब ओर पवित्रता, निगाहों में
शील, आवाज में मिठास और व्यवहार में नम्रता है। इस सुखी स्त्री नाक
की भावनाओं को भी स्वीकृत [illegible] कर देती है आदि २" मालूम होता है
ऐसे कहने वाले आधुनिक की भावनाओं में किसी २ मूर्च्छित हो गए होंगे
और उसी वेश्यावृत्तियों में उन्हें किसी ~~[illegible]~~ [illegible] स्त्री के पति होगए होंगे
जिनसे आप जैसी अंट-संट-ऊल जलूल बातें बक डालीं (मेरा जहां तक
ख्याल है, कि होश आने पर या मेरी स्त्री जैसी स्त्री तमाचा पड़ने पर तो उन्हें
अपने इस उन्मत्त प्रलाप पर जरूर रंज हुआ होगा।

हां, मैं कहां का कहां पहुंचा, यह कह रहा था कि यदि उन्होंने
पतिदेव को चुपचाप ले जाकर [illegible] कर दिया, तो ठीक ठीक ही है। अन्य
या जो कहीं कुंहरे से निकलवा।" कि बड़ी गन्दी है, खुद अपने कपड़े साफ
किए और [illegible]!" बस, कि क्या है, तमाशा लगे उस, मधुमक्खि-
यों के छत्ते को छेड़ा या टोपियों-वालों ने घर तो कोठी [illegible] दिया। एक-
या एक नये नये नजारे सामने आने लगेंगे, और श्रीमुख से निकलेगा कि
"तुम गन्दी, तुम्हारी मां गन्दी, [illegible] गन्दी कह कर चले,
रात दिन तो काम करते २ मरी जाती हूं, और ऊपर से गन्दी कहते हैं, जाओ
और रांड ढूंढ लो, या किसी को नौकर रख लो, उससे काम कराओ, मुझसे
काम नहीं होता, क्या अकेले हमने ही भाई खाई है, जो मरते मरते मर-
जाय. और ऊपर पड़े हुक्म चलाया करें आदि २। और कहते कहते
फूट फूट कर रोना शुरू कर देंगी। अब पाठक महाशय, आप तो यही
करेंगे, रात को अंधेरे का जाय, कोई औसत लगा, और इधर श्रीमती
जी का रोना, मारे शर्म के या अपनी इज्जत रखने की [illegible] छुपाई।
और लगे उन्हें मनाने और पाप कहने को। प्यारे नवयुवको
~~[illegible]~~ आराम की नींद छोड़ो, आदि रात में अपने दिल पर
टहलने आके, फिर चक्कर से और जितने भी आराम मिलते हैं, उनसे
की लूटें जरूर हो और प्रश्न को कुछ का देख कर जाना चाहते हो,
तो चुपचाप पाठक मंजूर कर लो, अन्यथा खूब सोच समझ कर
~~[illegible]~~ इस नरक कुंड में प्रवेश करो। क्योंकि इस मन का [illegible]
[illegible] वैसे ही [illegible] की सम्भावना का अवसर [illegible] है।

आगे तक लिखो [illegible]

—०—